आपातकाल

में

सृजन फुलवारी

मंजू सरावगी 'मंजरी'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी
(सेदोका संग्रह)

मंजू सरावगी 'मंजरी'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ANTRASHABDSHAKTI
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 मंजू सरावगी 'मंजरी'
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY MANJU SARAVGI 'MANJARI'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्कीस दिन के लॉकडाउन में एक साथ 55 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

सेदोका विधा परिचय

सेदोका में छह चरण होते हैं।
इसके पहले और चौथे चरण में 5-5 वर्ण तथा दूसरे, तीसरे, पाँचवें,
छठे चरणों में 7-7 वर्ण होते हैं।
इस वर्णिक क्रम को (5+7+7+5+7+7) लिखा जाता हैं।

वन

नीम पीपल
नजर नहीं आते
तिनका ले घूमती
चिड़िया रानी
वन कटते सभी
आसरे को ढूँढती

गिरि

ऊंचे पर्वत
रास्ता रोक लेते हैं
तूफान थम जाते
लगन सच्ची
फौलाद भी टूटती
समुद्र सूख जाते

पहल

नील गिरि का
ये सुंदर नजारा
लगे बहुत प्यारा
चाय बागान
दार्जिलिंग की रेल
अनूठी है पहल

समुद्र

चौऊदा रत्न
जलनिधि समाये
मंथन कर पाये
विष अमृत
दुनिया में छाये
देव दानव चाहे

शीत लहर

शीत लहर
चली सर्द हवायें
तन कंपकंपाये
सड़क पर
जमी बिछौना नहीं
लपेटे कोहरा तन

धूप

धूप चादर
खेतों पर लहराये
बाली पकने लगी
कृषक झूमे
फसल देखकर
हाथ वंदन कर

ममता

ले किलकारी
ममता के आंचल
बीतता बचपन
बिसरी यादें
माँ पिता के त्याग की
है औलाद आज की

भोर

ओस कण ये
मोती से चमकते
नीलकमल पर
चांद किरण
बिखेरे शबनम
चूमे भोर किरण

निदिंया

ओढ़ रजाई
आती निदिंया रानी
ठड़ी लगी सुहानी
घर आंगन
सुनहरी सुबह
कुनकुनाती धूप

हरसिंगार

हरसिंगार
करें धरा श्रृंगार
महकते अपार
खूबसूरत
मखमली बिछौना
सम्मोहित हो नैना

अपराजिता

अपराजिता
सुंदर मनोहर
प्रिय मुरली धर
मयूर पंख
जैसा है रंग रूप
खिले मौसमी फूल

हवस

मासूम कली
हवस सेज पर
बिखरी टूट कर
पंख नोचते
दरिन्दे जानते हैं
सजा न कोई डर

अहमियत

अहमियत
उड़ते वक्त पंछी
जानते हैं जमीं की
आकाश पर
बैठने शाख नहीं
पेट को दाना नहीं

खंडहर

ये खंडहर
बुंलद इमारत
कभी थी अमानत
है लावारिस
देश की धरोहर
मिटी किस कदर

भूख

पेट की आग
जला रही मन को
चूल्हा ठड़ा पड़ा है
खाना की चाह
आंखों को जगा रही
ठडी़ कंपा रही है

अनुरोध

है अनुरोध
हमारी समाज से
दिखावे के काज से
कर्तव्य बोझ
मुक्त करो सभी को
ठान लो सब अभी

ठंड

गुलाबी ठंड
भली लगे मन को
शरद ऋतु आई
धूप सुहानी
बदन सहलाये
खाना गरम भाये

सृजन फुलवारा

गंगा

मोक्षदायिनी
पावन गंगा नदी
हिमालय की बेटी
अमृत धारा
नव संचार करे
आस्था विश्वास भरे

बचपन

लौटा दे कोई
बचपन हमारा
जी ले हम दुबारा
जिंदगी फिर
खुशी में बिताना है
हर गम भुलाना

पेड़

हवा के झोखे
झूमते पेड़ पौधों
मुदित उपवन
कर श्रृंगार
हरियाली चूनर
महके धरा तन

नदी

अनवरत
पहाड़ी सीना चीर
इठलाती आती मैं
जमीन पर
अपने प्रियतम
सागर की बाहों में

किरण

सूर्य किरण
हो आशा की किरण
अंधकार को मिटा
लाती सुबह
जीवन में खुशी की
जग में रोशनी की

तुलसी

घर आंगन
महकती तुलसी
प्रभु हदय बसी
पावन वृंदा
रोग शोक हरती
शुद्ध होती धरती

प्रदूषण

प्रदूषण में
धूल धुआँ है बढ़ा
जीना हुआ दुश्वार
हहाकार में
दिल्ली रो रहा आज
मानव है लाचार

टीले

रेत के टीले
फैलाती है हवायें
बिखरे अरमान
सर्द तूफानी
झंझावात दिलके
भम्रित हो धूमिल

सूर्य

पिया का गाँव
सूरज की लालिमा
नजर जब आती
उनींदी आंखे
भागता बचपन
दिखे रसोई घर

बचपन

यादें घरौंदा
दिलाये बचपन
हुए है पचपन
नदी किनारा
बुला रहा फिर से
आओ खेले दिल से

ज्वार भाटा

ज्वार भाटा सा
मन में हो भूचाल
मन मंथन बेहाल
लावा बिखरा
फटकर जमी में
फैलता अंर्तमन

हिम शिखर

हिम शिखर
दमकता सौन्दर्य
भोर स्वर्णिम आभा
दर्पण बन
क्षितिज ही क्षितिज
प्रतिबिंबित होता

हंसवाहिनी

माँ सरस्वती
आलौकिक स्वरूपा
हंसवाहिनी रूपा
विद्‌यादायनी
ज्ञान भंडार भरो
अंधेरा दूर करो

बंसत

आया बंसत
नाचे झूमे बहार
बंसत है त्यौहार
मोती का हार
धरा करें श्रृंगार
पीली छाई बहार

वचन

सात वचन
हमसफ़र साथ
लेके हाथों में हाथ
सात कदम
सात जन्मों के लिए
गठबंधन किये

जलधारा

अलक नंदा
चांदी सी जलधारा
हिमखंड का तन
प्रतिबिंबित
भोर सूर्य किरण
मन बना हिरण

चन्दन

चंदन पेड़
सर्पों की फुसकार
न बदले संस्कार
सुगंध देते
सबको सीख देते
विष न अपनाते

गठबंधन

सात वचन
लेकर वादा साथ
मन से अपनाओ
गठबंधन
तन से तन नही
मन से मन सही

प्रेम

आपका प्रेम
आपका व्यवहार
मीठा नदी जल सा
तृप्त करती
तपती धरती को
मेघ अमृत बूंद

आशियाना

सघन पेड़
आशियाना पंछी का
ये सुंदर घोसले
चहचहाती
नन्ही नन्ही चिड़िया
आकर्षित दुनिया

पंछी

घर आंगन
पंछी जैसा बसेरा
बेटियों का मायका
रह जाते है
भूली बिसरी याद
डबडबाते नैन

निर्झर

धरा निर्झर
शुष्क होती जा रही
जल संकट देखो
पर्यावरण
प्रदूषित हो रहा
वृक्ष दोहन रूको

सैर

प्रातः की सैर
भोर किरण संग
स्वस्थ तन मन
नव संचार
दिखता सब ओर
भागमभाग दौर

सूरज

हिम शिखर
दमकता सौन्दर्य
भोर स्वर्णिम आभा
दर्पण बन
क्षितिज ही क्षितिज
प्रतिबिंबित होता

अकेलापन

अकेलापन
सबसे बड़ी सजा
इंसान की है खता
घबराहट
छटपटाहट है
मन की है आहट

महामारी

देश की दशा
वैश्विक महामारी
विनाश की तैयारी
विश्व हताश
चारों ओर निराशा
नहीं है कोई आशा

अलग

दोनों अलग
धरती आसमान
जोड़ता है इंसान
आवागमन
सागर की लहरें
अनुभव ठहरे

लक्ष्मण रेखा

लक्ष्मण रेखा
खींची हर देहरी
द्वारे बने प्रहरी
नजरबंद
सुरक्षित तैयारी
कोरोना महामारी

सफाई

घर आँगन
रखो नित सफाई
सब देते दुहाई
जूता चप्पल
बाहर उतारना
भूलो दावत खाना

अभिवादन

हाथ मिलाना
भूलो गले लगाना
भारतीय संस्कृति
अभिवादन
इसको अपनाओं
दूर से बात करो

शंखनाद

हो शंखनाद
बने विश्व विजेता
होगे भारतवासी
रणबांकुरे
डाक्टर कर्मचारी
लड़ने की तैयारी

जैविक हथियार

खतरनाक
जैविक हथियार
हैं बेबस लाचार
करते वार
पराजित मानव
आया कैसा दानव

परमाणु

सूक्ष्म कीटाणु
बना है परमाणु
बड़ा विषाक्त अणु
चीनी औजार
खौफनाक मंजर
लाशों का समंदर।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

मंजू सरावगी 'मंजरी'

मण्डला (म.प्र.)

पता- मंजू सरावगी/श्री राजेन्द्र सरावगी
बी-७, राधा स्वामी नगर, नियर भाटा गाँव चौक
रायपुर (छतीसगढ़) पिनकोड-४६२००१

E-mail - manjusaraogi100@gmail.com
Mobile - 9770221802, 9479246627

आपातकाल में अंतरा शब्दशक्ति का पटल मेरे लिए महत्वपूर्ण रहा क्योंकि मैं फुर्सत के समय या थकान के समय इस ग्रुप में में रचना या लेख पढ़ने लगती हूँ या स्वयं लिखने लगती हूं। इस पटल पर सभी प्रकार की जानकारी, ज्ञान वर्धक रचनायें लेख पढ़ने को मिल जाते हैं और फिर अन्य मित्र रचनाकारों से उनकी रचनाओं के साथ मुलाकात हो जाती है विश्वास है कि सभी लोगों से मेरी जल्दी मुलाकात होगी। पटल के सभी भाई बहन भी मुझे उचित मार्गदर्शन देगें। मैं आशा करती हूँ, अपनी सीखी हुई नई विधा 'सेदोका विधा' के रूप में मेरी रचनाओं को आपका आशीर्वाद मिलेगा।

प्रीति जी के लिए कुछ लिखना या कहना सूरज को दीया दिखाना होगा, इसलिए उनको मेरा अभिवादन एवं सेदोका संग्रह के लिए आभार। (सेदोका जिसमें छह चरण होते हैं। इसके पहले और चौथे चरण में ५-५ वर्ण तथा दूसरे, तीसरे, पाँचवें, छठे चरणों में ७-७ वर्ण होते हैं। इस वर्णिक क्रम को (**5+7+7+5+7+7**) लिखा जाता हैं।)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

ANTRASHABDSHAKTI

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/